नाम - डॉ. शेशनी मिश्रा

महाविद्यालय का नाम - दुर्गा महाविद्यालय

संकाय - कला

पदनाम - संविदा सहायक प्राध्यापक

विभाग - हिंदी

शीर्षक - छत्तीसगढ़ी काव्य साहित्य का विकास

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का विकास

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का विकास, छत्तीसगढ़ी लोक की मान्यताओं, संस्कृति तथा अपनी परम्पराओं से निर्मित हुआ है। छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित साहित्यिक रचनाओं का आरंभ लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हो चुका था लेकिन तब उतना साहित्य सृजन नहीं हुआ था फिर भी छत्तीसगढ़ी साहित्यिक धारा विभिन्न कालों में रचित साहित्यिक रचनाएँ उपलब्ध हैं। इस साहित्यिक धारा को विभिन्न युगों के आधार पर तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। —

1. गाथा युग – 1000 से 1500 ई. तक
2. भक्ति युग – 1500 से 1900 ई. तक
3. आधुनिक युग – सन् 1900 से आज तक

इन विभिन्न युगों में रचित साहित्य का उल्लेख कालक्रम के अनुसार इस प्रकार है —

(1) गाथा युग (आदि काल) इस समय छत्तीसगढ़ी में अनेक गाथाओं की रचना हुई, लेकिन ये रचनाएँ लिपिबद्ध नहीं हैं। ये केवल मौखिक हैं और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से हस्तांतरित होते आए हैं। इस समय की रचनाएँ प्रेमपरक और धार्मिक एवं पौराणिक गाथाएँ तथा वीरता परक हैं। वर्तमान में इन रचनाओं को लिपिबद्ध कर लिया गया है।

~~प्रेम प्रधान गाथा~~ — धार्मिक और पौराणिक गाथा —

'रामायण' और 'महाभारत' ये दो महाकाव्य हमारे साहित्य के आदि स्रोत हैं। छत्तीसगढ़ी में भी 'फूलबासन' और 'पंडवानी' की कथा प्रसिद्ध है। फूलबासन में रामायण से संबंधित कथा है, जिसमें सीता और लक्ष्मण की कथा है। इस कथा में सीता लक्ष्मण से स्वप्न में देखे गए 'फूलबासन' नामक फूल लाने का अनुरोध करती है। 'पंडवानी' की कथा महाभारत में वर्णित पांडवों की कथा है।

प्रेम प्रधान गाथा — छत्तीसगढ़ की प्राचीन प्रेम प्रधान गाथाओं में 'अहिमन रानी', केवला रानी', रेवा रानी नारी प्रधान लोकगाथाएँ हैं। लोरिक चंदा ये गाथाएँ चरित्र प्रधान गाथा है। इसकी कथन शैली जीवंत पृष्ठभूमि का भाव जाग्रत करते हैं।

भक्ति युग (मध्यकाल) इस युग में छत्तीसगढ़ पर बाहरी आक्रमणकारियों ने आक्रमण किया, जिससे अशांति का युग बना रहा और रचनाओं में यह प्रभाव दिखने लगा। डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा ने छत्तीसगढ़ी भाषा का इतिहास में भक्तियुग को तीन धाराओं में विभाजित किया है —

मध्ययुग की वीर गाथाएँ — इस युग की वीर गाथाओं में फूलकुँवर, देवीगाथा और कल्याण साय की गाथाएँ प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त कलचुरी वंश में 'गोपल्ला गीत', रानी माड़, नगेसर कइना तथा रायसिंह के पवारा ने नाम लघुकथा के रूप में प्रसिद्ध हैं। इसी तरह लोरिक चंदा, सरवन गीत और ढोला गीत भी है। 'फूलकुँवर' की गाथा में वीरांगना फूलकुँवर के द्वारा मुसलमानों से लोहा लेने की घटना का चित्रण किया गया है। इनकी तुलना झाँसी की रानी से किया गया है।

धार्मिक एवं सामाजिक गीतधारा — इस समय छत्तीसगढ़ अंचल कबीरदास जी से प्रभावित था। इस समय कबीर पंथ, सतनाम पंथ बहुत ही प्रसिद्ध थे। कबीर पंथ के शिष्य धरमदास ने छत्तीसगढ़ में कबीर पंथ की शाखा स्थापित की। धरमदास को छत्तीसगढ़ी भाषा के आदि कवि के रूप में जाना जाता है। इन्हीं के द्वारा हमें छत्तीसगढ़ी साहित्य का लिपिबद्ध रूप प्राप्त हुआ।

संत धरमदास ने उच्च कोटि की आध्यात्मिक रचनाएँ की हैं, जिनमें कबीर का प्रभाव परिलक्षित होता है। सतनाम पंथ के संस्थापक गुरु घासीदास थे। इन्होंने पंथी गीतों में दिखावा व आडंबर दूर

नाम महिमा का गुणगान किया है।
भक्ति युग में स्फुट रचनायें भी हुई हैं। इस युग के कवियों में गोपाल, रेवाराम, लक्ष्मण और प्रहलाद दुबे का नाम उल्लेखनीय है।

आधुनिक युग — आधुनिक युग का समय 1900 से अब तक का है। इस युग में सर्वाधिक लिपिबद्ध रचनायें मिलती हैं। छत्तीसगढ़ी साहित्य में सभी विधाओं पर रचना की गई है। इसका आरंभ गोविन्द प्रसाद पाण्डेय ने किया। ठेठ छत्तीसगढ़ी साहित्य को ग्राम्य भाषा से साहित्यिक स्वरूप में लाने का श्रेय पं. सुन्दरलाल शर्मा को है। उनके द्वारा रचित 'दानलीला' के चार संस्करण प्रकाशित हुए, जो दोहा चौपाई में रचित है। इसमें भगवान श्री कृष्ण और गोपियों के मधुर प्रेम को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया गया है। शर्मा जी ने 'छत्तीसगढ़ी रामायण' की भी रचना की है। इसके पश्चात् जगन्नाथ प्रसाद भानु, कपिलनाथ मिश्र और शुकलाल प्रसाद का नाम विशेष उल्लेखनीय है। सुंदरलाल को छत्तीसगढ़ी साहित्य के पुरस्कर्ता के रूप में जाना जाता है। हिंदी साहित्य में जो कार्य भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने किया, वही छत्तीसगढ़ी साहित्य में पं. सुंदरलाल शर्मा ने किया। अतः उन्हें छत्तीसगढ़ी साहित्य का भारतेन्दु कहा जाता है।

इसी क्रम में कुंजबिहारी चौबे, गिरिवर दास वैष्णव, पुरुषोत्तम लाल, गया प्रसाद बसेडिया, गोविंद राव विट्ठल, कुँवर दलपत सिंह और किशन लाल ढोटे का नाम उल्लेखनीय है। गोविंदराव विट्ठल ने 'छत्तीसगढ़ी दानलीला' के आधार पर 'छत्तीसगढ़ी नाग लीला' की रचना की।

इस काल के अन्य कवियों में प्यारेलाल गुप्त, कोदूराम दलित, द्वारिका प्रसाद तिवारी विप्र की रचनाएँ बहुत प्रसिद्ध है। श्यामलाल चतुर्वेदी ने छत्तीसगढ़ी साहित्य को और समृद्ध किया। उन्होंने राम-वनवास, 'बेटी के बिदा' कविता की रचना की। उन्होंने 'पर्रा भर लाई' काव्य की रचना की। उस समय के कवियों में लखन लाल गुप्त, नारायण लाल परमार, दानेश्वर शर्मा, हरि ठाकुर, केयूर भूषण, टिकेन्द्र टिकरिहा आदि कवियों ने गीतों और कविताओं की रचना की।

इन कवियों के अतिरिक्त छत्तीसगढ़ी में कुछ अन्य कवि भी है। इनमें जमुनाप्रसाद यादव, हेमनाथ यदु, विद्याभूषण मिश्र, पवन दीवान, बसंत दीवान, रविशंकर शुक्ल, भगवती लाल सेन, रघुवीर अग्रवाल 'पथिक' और लक्ष्मण मस्तुरिया का नाम उल्लेखनीय है।